om-11 INITIAL_Page 1 and 2 12-08-2014 11:59 Page 3



# कर्म को 'कर्त्तव्य' बनायें

इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर कुलियों का एक झुण्ड बैठा था। दो-तीन सामान उठाने में उनकी रुचि नहीं थी। इतने में एक वृद्ध कुली आगे आता है। लूंगी और लाल रंग की कफनी, बढ़ी हुई दाढ़ी, फिर भी चेहरे पर निराशा का नाम नहीं। सामान उठाकर वो धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। तेज़ चला नहीं जाता, जिसका सामान वो सिर पर उठाए चलता है वो तीर्थयात्री भी ज़्यादा उम्र के कारण तेज़ी से नहीं चल पाता। दोनों की वेदना समान है, प्लेटफॉर्म पर पहुंचते हैं। यात्री कुली से पूछता है: ''आपसे वजन उठाया नहीं जाता ये सही है, फिर भी आपके मुख पर दु:ख या निराशा की कोई छाया दिखाई नहीं देती, उसका मुझे आश्चर्य है!

- ब्र. कु. गंगाधर

कुली ने बड़े स्मित भरे स्वर में कहा: ''संसार बसाकर बैठे हैं, इसलिए परिवार के खातिर कर्त्तव्य तो अदा करना ही पड़ेगा। उसे भार या बोझ समझ के कर्म करुँ तो कर्त्तव्य में मिठास नहीं आयेगी और मैं अपने दु:ख की छाया मेरे अन्नदाता मुसाफिर या यात्री के ऊपर क्यों पड़ने दूँ?

आज सिर्फ लोग अधिकार की बातें करते, कर्त्तव्य का सिर्फ मशीनी रूप से निर्वहन करते, कमाई करके जैसे कुटुम्ब पर उपकार करते हों। और जब लोगों से बाते करते, कोई तो हमारी राम कहानी सुनो। अब आप ही बताइए क्या कुली की कर्तव्यपरायणता और कर्म प्रसन्नतापूर्वक अदा करने की उदार भावना बहुत कुछ नहीं कह जाती है!

उसी दिन अनिल श्रीवास्तव का एक अखबार में लिखे किस्से की ओर ध्यान जाता है। उसमें महाराष्ट्र के एक कृष्ण मंदिर का उल्लेख था। उस मंदिर से संबंधित एक कथा प्रचलित है कि कृष्ण की भक्ति करने वाले भक्त पर प्रसन्न हुए भगवान स्वयं चलकर मिलने पहुंच गये। उस वक्त वो भक्त माँ की सेवा में व्यस्त था। सामने एक ईंट पड़ी थी। वो भक्त ईंट की ओर इशारा कर भगवान कृष्ण को कहता है कि आप कृपा कर थोड़ी देर के लिए इस ईंट पर बिराजिए। अभी मैं माता की सेवा में व्यस्त हूँ। श्रीकृष्ण स्वयं आये हुए हैं, ये जानते हुए भी भगवान के बदले वो भक्त माता के प्रति अपने कर्त्तव्य को सर्वस्व मानता है।

कर्म में निष्ठा और समर्पण का समावेश हो तो कर्त्तव्य का रूप धारण होता और बोरियत और यांत्रिकता मिले तो व्यर्थ का रूप धारण होता है। काम करना एक बात है लेकिन काम को स्फूर्ति,आनंद, प्रीति और भावनापूर्वक अदा करना ये दूसरी बात है। आज सरकारी, अर्धसरकारी या स्वयंभू संस्थाओं के लोग असंतोष और फरियाद करते दिखाई देते हैं, उसका कारण यही है क्योंकि कर्म में शुद्धता और आनंद के समावेश का अभाव रहता है। इसलिए काम में बरकत नहीं आती। काम को व्यर्थ समझते कर्मचारी 'नौकर' है, क्योंकि वे धन के लिए नौकरी करते हैं। कर्म को कर्त्तव्य समझ खुद की तमाम शक्ति और भावना स्वयं को अगर दे दी जाती तो वो ली गई ज़िम्मेदारी खुद के प्रति निष्ठावान तथा सम्पूर्णरूप से न्याय देने वाली होती। इस तरह विचार करने वाला कर्मचारी 'नौकर' नहीं लेकिन भगवान के प्रीति पात्र 'सेवाधारी' है।

कर्म और कर्त्तव्य के प्रति उदार दृष्टि कर्म को प्रकाशित करता है। उत्तरदायित्व (फर्ज़) को ईश्वर भक्ति मानने वाला कर्मचारी या अधिकारी, भ्रष्टाचार, कामचोर, या पलायनवादी आचरण नहीं करेगा, कर्म ही देवता और कर्त्तव्य रूप से पलायनवाद ही जहन्नुमी इन्सान की खासियत है।

समाजसेवा करने वाले के पक्ष में कार्य में फर्ज़ अदा करने वाले व्यक्ति कई बार ऐसी वकालत करते हैं कि फर्ज़ के बदले में उसे क्या मिला? उच्च पद पर विराजित तो 'बडे' लोग हो गये, हम तो जहां थे वैसे ही रह गये।

लेकिन हरेक व्यक्ति कर्म के फर्ज प्रति मात्र आसक्ति या फल प्राप्ति लालच रखकर ही कर्म करते तो कर्म गौण बन जाता और वे 'कर्त्तव्य' के न्याय तक पहुँच नहीं सकते। कर्म बोझ बनकर करते व्यक्ति काम को निपटाता, काम दीप उठे ऐसी भावना उनके मन में न रहने से कार्य उत्तम रीति से करने का संतोष और आनंद उसे नहीं मिलता। ऐसी मनोवृत्ति वाले लोग के मन में कम काम करना पड़े यही संतोष और आनंद की बात होती है। - शेष पेज 7 पर...

# पवित्रता और योगबल से नई दुनिया का निर्माण

अमृतवेला और नुमाशाम यह दोनों बातों में कोई बहाना नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसा संगठन फिर सारे कल्प में नहीं मिलेगा। इतना संगठन से प्रेम है, सुख है तो वो प्रेम, वो सुख खींच के ले आता है। अकेला बैठेंगे याद करेंगे, कोई-न-कोई काम मिल जायेगा तो उठ के खड़े हो जायेंगे। यहाँ (संगठन) से कोई नहीं खींचता है, जिसको आना है यहाँ आ जाये। तो संगमयुग के समय का महत्व हो और हमारी संगम की याद एक्यूरेट रहे तो बाबा कहेगा बहुत अच्छा। कोई भी कारण से अगर और कोई बात याद आई... नहीं आयेगी।

बाबा की बातों को न बिसरो, बाकी कोई बात याद नहीं करो, इतना अच्छा यह मंत्र है, इससे बहुत खुशी रहेगी, और इस खुशी में बड़ी कमाई है। कमाई की खुशी है। हमारी यह साधारण खुशी नहीं है, सदाकाल की खुशी है इसलिए ऐसी पढ़ाई को पढ़ते-पढ़ते थकते नहीं हैं क्योंकि इस पढ़ाई में शक्ति है। बाबा की एक-एक बात को जितना रिवाइज करते हैं, उतना शक्ति का अनुभव होता है।

कोई-न-कोई बाबा के बच्चों को, कोई-न-कोई स्व-उन्नति एवं विश्व सेवा में इन्वेस्टन की टचिंग आती है, जो उनके कार्य से उनका भी भाग्य और सेवा में भी कुछ यादगार बन जाता है। अभी देखो क्या भण्डारा बनाया है। कमाल है बाबा के बच्चों की। पहले तो सब काम हम खुद ही करते थे तो वो दिन भी प्यारे थे जो शिवबाबा साथ हमारे थे। शिवबाबा ब्रह्माबाबा में आया एक्यूरेट बनाने के लिए, पढ़ाई और पालना ऐसी वन्डरफुल दी है। एक बार बाबा ने 36 प्रकार का भोजन बनवाया और कहा कि अभी जितना चाहे उतना खाओ। फिर रात को पूछा कौन-सी चीज़ अच्छी थी? तो किसी ने कहा यह अच्छा था, किसी ने कहा यह अच्छी थी, तो बाबा ने कहा फेल। फिर दूसरे तीसरे दिन ऑर्डर किया सिर्फ डोडा, छाछ और दाल मिलेगी, आज इतना ही मिलेगा और कुछ नहीं मिलेगा। जिसको यही खाना हो वही रहे, जो नहीं खा सकते हैं वो जाके सो जाये माना जहाँ कोई बीमार रहते हैं वहाँ जाके रहें।

तो वन्डर तो यह हुआ जो अच्छे तन्दरूस्त थे, उनको लगा मैं बीमार न पड़ जाऊं इसलिए वो गये और जो बिचारे बीमार भी थे वो बैठ गये लस्सी डोडा खाने के लिए। उनकी बीमारी चली गयी। जैसे दादी गुल्ज़ार और कुछ नहीं बोलेगी जो बाबा ने कहा है वही किया है, इसका रिकॉर्ड है। कभी भी रिकॉर्ड हमारा खराब न हो माना बाबा का रिगार्ड रखना। जिसको बाबा के लिए रिगार्ड है उसका रिकॉर्ड अच्छा होगा। है छोटी बात परंतु सारा राज्य पद, प्रजा पद का आधार है-रिकॉर्ड अच्छा रखना।

रिकॉर्ड अच्छा रखना कितना शान है, अन्दर से लगता है परचिंतन नहीं, स्व-दर्शन चक्र फिराओ, बाबा की याद में रहने से ऑटोमेटिक बुद्धि ऊपर चली जायेगी। नैचुरल है ऊपर जो बुद्धि गई, तो नेक्स्ट स्वदर्शन, सारे चक्र की याद आ गई। चक्र याद आने से झाड़ और बीज की याद आ गई। बीज ऊपर है,

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

वो बीज नीचे होता है। परमधाम से आत्मायें जब नीचे आती हैं तब सीधा ही उनको दु:ख नहीं मिलता है। पर हम जो आत्मायें हैं सिर्फ शुद्ध नहीं हैं, बाबा ने हमारे में पवित्रता भी भरी है। पवित्रता क्या है? इस पर कम-से-कम आधा घण्टा विचार करो। पवित्रता और योगबल से बाबा नई दुनिया बना रहा है। पवित्रता से योग लगे, उसका बल मिले।

शिव शक्ति पाण्डव सेना को न मान चाहिए, न शान चाहिए, ऐसी स्थिति बनाना सिर्फ सौभाग्यशाली नहीं, पदमापदम भाग्यशाली है। ऐसी स्थिति बनाना माना बहुत कमाई करना जो गिनती नहीं कर सकते हैं। जब से बाबा समर्पण हुआ, बाबा ने नोट को हाथ नहीं लगाया। हमें भी कौन-सी कितने की है वो मालूम नहीं था, पर यहाँ आ करके सीखना पड़ा। पहले आना दो आना चलते थे, कहते थे एक बारी आना, एक आना। एक बारी आने में भगवान कहता है कहाँ आये हो, किसके पास आये हो? मैं कहती हूं मरना हो तो एक धक से मरो, हूं हां करके नहीं मरो, अन्त मते सो गते ऐसे हो जायेगी।

# विकर्म विनाश होने की निशानी 'हल्कापन और खुशी'

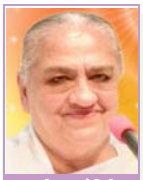
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

**प्रश्न:-** एक मुरली में बाबा ने कहा है कि तुम सिर्फ मुझे देखो और मेरी करेन्ट लो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे, तो क्या देखें? कैसे करेन्ट लें जो विकर्म विनाश हो जायें। अगर विकर्म विनाश हो रहे हैं तो उसकी निशानी क्या होगी?

**उत्तर:-** बाबा को देखेंगे तो बाबा के मस्तक में जो आत्मा बिन्दू है, उसको ही देखेंगे ना, उसी से ही शक्ति लेंगे तो विकर्म भी विनाश होंगे। लेकिन उसी रीति से योग में बैठेंगे तो! लक्ष्य होगा तो लक्ष्य से हो जायेगा। विकर्म विनाश हो गये तो उसकी निशानी, हल्कापन आयेगा और खुशी होगी। जैसे कोई बीमारी खत्म होती है तो क्या फीलिंग आती है? ऐसे यह भी एक रौनक अपने मन के अंदर अच्छी होगी। अटेन्शन होगा तो संस्कार भी चेंज होंगे। योग से ही पुराने संस्कार परिवर्तन होंगे। किसी भी रीति से योग लगाओ, योग तो अग्नि है उसमें संस्कार परिवर्तन ज़रूर होंगे। फिर वह संस्कार बीच-बीच में इमर्ज नहीं होंगे। जैसे कोई किचड़ा निकलता है, पेट ठीक नहीं है, पेट साफ हो जाता है तो कितना फर्क पड़ जाता है। ऐसे अपनी बुद्धि क्लीयर हो जायेगी तो अपनी मौज में रहेंगे। अन्दरूनी खुशी होगी। जैसे कभी-कभी अचानक ऐसे होता है कि आज मुझे क्या हुआ है जो अंदर ही अंदर बहुत खुशी हो रही है। ऐसे भिन्न-भिन्न अनुभव हो सकते हैं।

प्रश्न:- बाबा मुरलियों में कहता है, तुम्हें बाप समान बनना है, सम्पन्न बनना है। तो किन-किन बातों में हमें सम्पन्नता की ओर जाना है, हम सम्पन्नता के नज़दीक पहुँच रहे हैं उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- सम्पन्नता के नज़दीक पहुँचे हैं या दूर हैं, वह तो अपनी अवस्था से ही पता चलेगा। मानो हमको बीच-बीच में कोई बात देखकर व्यर्थ संकल्प चल जाते हैं, तो पता है ना, जब सम्पन्नता के नज़दीक पहुँचेंगे तो उसमें फर्क होगा। जो भी हमारे में कमी होगी, अगर हमारा अपने पर अटेन्शन है तो वह कमी नज़र आयेगी। समझो व्यर्थ चलता है, उसके लिए मैं कोशिश करूं कि व्यर्थ नहीं आवे, खास मैं ऐसा क्यों सोचूं, क्या पुरुषार्थ में अटेन्शन दूं, जो व्यर्थ न आवे।

प्रश्न:- जब ब्रह्मा बाबा के बारे में सोंचते हैं या सुनते हैं और अपने को देखते हैं, उनके साथ अपनी भेंट करते हैं तो सूक्ष्म वा स्थूल दोनों में बहुत डिफरेन्स दिखाई देता है, तो उस दूरी को निकालने के लिए हमें क्या करना होगा?

उत्तर:- करना तो हर एक को अपना पुरुषार्थ है। अपने में जो कमी दिखाई दे, उसकी तरफ अटेन्शन जाये और फिर पुरुषार्थ करे। ऐसे ही नहीं, ठीक हो रहा है, ठीक हो जायेगा, नहीं। लेकिन हमारी कमी क्या है, वह चेक होवे और उसपर अटेन्शन हो।

प्रश्न:- बाबा कहता है, बच्चे तुम्हें दु:खी, अशान्त आत्माओं की पुकार सुनाई नहीं देती है, लेकिन उन आत्माओं तक तो हमारा संकल्प पीछे जायेगा, पहले जो हमारे आजू-बाजू में रहते, जो वातावरण है, कम से कम वहाँ तक तो हमारा संकल्प जावे, अभी तक तो वह भी नहीं होता है?

उत्तर:- हो सकता है, हमारे संकल्प में पावर कम हो लेकिन जो लेने वाले हैं उन्हों को भी तो होना चाहिए। लेने वाले को लेने की इच्छा ही नहीं है तो आपका पहुँचेगा कैसे।